आरती संग्रह

40 आरतियां

आभार :

इस आरती संग्रह को आप तक पहुंचाने के लिए हम

श्री नरेश मित्तल

M/s. Bentex Industrials

Dealers, Exporters & Importers of :
Steel Rolling Mills / Induction Furnaces and it's Parts, E.O.T. Cranes, Shearing Machines, Workshop Machinery, Electrical Goods & other Industrial Plants

Motia Khan, Behind Basant Foundry,
Mandi Gobindgarh-147301 (Pb.) India
Cell : +98150- 67929, +93163-67929
Fax : +91-1765-257678
Website : www.bentexindls.com
E-mail : bi96@rediffmail.com, bentexindls@yahoo.com

से मिले सहयोग के अत्यन्त आभारी हैं।

ईश्वर उन पर अपनी कृपा सदैव बनायें रखें।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

निवेदन

श्री ईशोपनिषद् में आवाहन मन्त्र है

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

भावार्थ ईश्वर और यह कार्य जगत दोनों पूर्ण हैं। पूर्ण ईश्वर से पूर्ण जगत की उत्पत्ति हुई है। ईश्वर से जगत की उत्पत्ति होने पर भी ईश्वर पूर्ण ही शेष रहता है उसमें कोई कमी नहीं आती।

अपने विषय को भली प्रकार समझाने के लिए मैनें इस मन्त्र का सहारा लिया है। आज के समय में सूचना प्रौद्योगिकी में जो विकास हुआ है, कम्प्यूटरों का युग आ गया है तो इसका लाभ धर्म को भी होना चाहिए। अगर धर्म प्रचार के लिए आपकों पुस्तकें बांटनी हो तो आप ज्यादा से ज्यादा कितनी पुस्तकें बांट सकते हैं, कुछ हजार या संभवतः लाखों और इस पर कितना खर्च आएगा? दूसरी तरफ यदि आप एक पुस्तक कम्प्यूटर पर पढ़ने के लिए ही तैयार करते हैं तो उसे करोड़ों लोगों में भी बिना किसी खास खर्च के वितरित किया जा सकता है। इतना करने पर भी आपके पास पूर्ण पुस्तक ही शेष रहती है उसमें किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आती।

धर्म के विकास, प्रचार, प्रसार, दया, सद्भाव आदि सद्गुणों के विकास के लिए स्वाध्याय एक आवश्यक साधन है। आने वाली पीढ़ियों को हजारों वर्षों से चली आ रही धार्मिक परम्पराओं का ज्ञान रहे, समाज में सद्भाव रहे, घरों में शांति हो, छोटे बड़ों का आदर करें, सेवा करें यह सब बातें धर्मपालन द्वारा ही सिखाई जा सकती है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

धर्म ही देता है। अगर कोई अपने माता-पिता की सेवा नहीं करता तो राज्य का कानून उसे दंड नहीं दे सकता, हां धर्म के द्वारा सद्बुद्धि देकर उसे अवश्य ही सही रास्ते पर लाया जा सकता है।

जिस तरह से आज घर-घर में टैलीविजन है उसी तरह आने वाले कुछ वर्षों में हर घर में कम्प्यूटर भी होगा। इसलिए अगर ज्यादा से ज्यादा धार्मिक साहित्य कम्प्यूटर पर पढ़ने के लिए उपलब्ध हो तो इससे समाज को बहुत फायदा होगा। इस पुनीत कार्य में आप भी सहयोग दे सकते हैं। इस हेतु अपना योगदान देने के कई तरीके हैं यथा :

1. यह फाईल ई-मेल, फलापी या सी.डी. द्वारा अपने मित्रों, सम्बन्धियों को अवश्य भेजें ताकि वे भी इसका लाभ ले सकें।

2. आप अपना मूल लेखन हमें दे सकते हैं ताकि हम उसे अधिकाधिक लोगों तक पहुंचा सकें। इस बारे में निम्न बातों पर ध्यान दें :

आपके अध्यात्मिक गुरु या उनकी परम्परा में लिखा साहित्य जिसे आप इलैक्ट्रोनिक रुप से प्रकाशित करवाना चाहें जिससे कि उसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाया जा सके।

आपकी किसी तीर्थ में श्रद्धा है और आप उसके बारे में अधिक से अधिक लोगों को जानकारी देना चाहें तो यह भी एक परम पुनीत कार्य होगा। तीर्थ की स्थिति, भारत की राजधानी दिल्ली तथा राज्य जिसमें वह तीर्थ स्थित है उसकी राजधानी से उसकी दूरी, तीर्थ का इतिहास, महात्मय, वहां सुबह-शाम होने वाली आरतियां, प्रबन्धन, वर्ष में जाने का समय, तस्वीरें, वहां तक पहुंचने के साधन, रुकने की व्यवस्था तथा

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

अन्यान्य जानकारी आप लिखकर हमें दे सकते हैं जिसका अच्छे ढ़ंग से प्रस्तुतिकरण कर हम न सिर्फ आपको देगें बल्कि जो भी हमारे संपर्क में आएगा उन सब को भी निःशुल्क देगें। हमारी कोई भी पुस्तक आप निःशुल्क वितरित कर सकते हैं इस बारे में कोई बन्धन नहीं है।

3. अगर आप अपनी आस्था से सम्बन्धित धार्मिक साहित्य किसी लेखक से तैयार करवाकर हमें भेज सकें तो हम सहर्ष उसे इलैक्ट्रोनिक रुप से प्रकाशित करेंगे। अगर आपने पहले से धमार्थ कोई पुस्तक प्रकाशित करवा रखी है तो प्रिटिंग प्रैस वाले से उस पुस्तक की फलापी या सी.डी. लेकर हमें दे सकते हैं जिसे कि हम अतिशीघ्र प्रकाशित कर सकते हैं। ध्यान रखें बाजार में पहले से प्रकाशित पुस्तकें या उनकी नकल कर हमें न दें क्योंकि इससे सम्बन्धित प्रकाशक के कापीराईट अधिकारों का उल्लघंन होगा जिससे कि हम उसे प्रकाशित नहीं कर सकते। आप मूल संस्कृत लेख लेकर उसकी किसी विद्वान पंडित से व्याख्या करवा सकते हैं जिसमें किसी कापीराईट का उल्लघंन नहीं होता।

4. हमारा यह कार्य अच्छे ढ़ंग से तथा वृहद स्तर पर होता रहे इसके लिए आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता भी पड़ेगी। इस बारे में आप जो भी सहयोग दे सकें वह प्रशंसनीय होगा। इस बात को ध्यान में रखें कि हम जो भी कार्य करेंगे वह चिरस्थाई होगा तथा उसे बहुत ही कम लागत पर जन जन तक पहुंचाया जा सकेगा। हमारा लक्ष्य भी यह है कि समस्त वेद शास्त्रादि को कम्प्यूटर पुस्तकों के रुप में बनाया जाये जिससे कि सनातन धर्म का प्रचार तथा गौरव और भी ज्यादा बढ़ सके। इस ढ़ंग से हिन्दू धर्म तथा दर्शन के प्रचार के लिए कोई सीमा नहीं है।

इस महायज्ञ से धर्म की प्रतिष्ठा बढ़ने के साथ-साथ करोड़ों लोगों को फायदा होगा, खासकर यह फायदा आने वाली पीढ़ियों, आपके हमारे बच्चों को होगा जिन्हें एक बटन दबाने पर कोई भी ग्रन्थ, मंत्र उपलब्ध होगा। अतः आप भी इस यज्ञ में अपनी आहुति डालें। इसे सिर्फ एक पुण्य कार्य ही नहीं अपितु धर्म के प्रति अपना कर्त्तव्य समझें। इस हेतु विचार-विमर्श करने, अपने सुझाव, सहयोग देने के लिए आप कभी भी हमारा समय ले सकते हैं।

याद रखिए 'धर्मो रक्षतः रक्षतिः', धर्म की रक्षा करने से ही अपनी रक्षा होती है। धर्म की रक्षा, संरक्षण तथा इसे प्रोत्साहन देने का यह भी एक अवसर है, इसका उपयोग करना आपके हाथ में है।

भवदीय,

महेश बातिश

आरती संग्रह

आरती ईश्वर उपासना का एक सरल रुप है। किसी भी देवी-देवता की पूजा, पाठ, हवन आदि करने के बाद अंत में आरती की जाती है। 'ॐ जग जगदीश हरे' एक सर्वाधिक प्रचलित आरती है जो कि फिल्लौर के पंडित श्रद्धाराम फिल्लौरी ने अंग्रेजी शासनकाल में लिखी थी।

गणेश	गणपति	प्रार्थना	शिवजी
शंकर	शिव स्तुति	पार्वती जी	अम्बा
जगदीश्वर	सत्यनारायण	तुलसी	सरस्वती१
सरस्वती२	लक्ष्मी	कुन्जबिहारी	कृष्ण१
कृष्ण२	बालकृष्ण	गिरधर	राधा जी
राम१	राम२	रघुवरलाला	रामायण
वैष्णों देवी	हनुमान	संकटमोचन	गायत्री
गंगा जी१	गंगा जी२	संतोषी मां	परशुराम१
परशुराम२	भैरव१	भैरव२	शारदा देवी
शनि देव	यमुना जी	गुरु नानक	रविदास

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती गणेश जी की ।।

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

एक दन्त दयावंत चार भुजाधारी।
मस्तक पर सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।। जय..

अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। जय ...

हार चढ़ै, फूल चढ़े और चढ़ै मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे, संत करें सेवा।। जय ...

दीनन की लाज राखो शम्भु सुतवारी।
कामना को पूरा करो जग बलिहारी।। जय....

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री गणपति जी की ।।

गणपति की सेवा मंगल मेवा सेवा से सब विघ्न टलें।
तीन लोक तैंतीस देवता द्वार खड़े सब अरज करें।। टेक।।
ऋद्धि-सिद्धि दक्षिण वाम विराजे आनन्द सों चंवर ढरें।
धूप दीप और लिए आरती भक्त खड़े सब अरज करें।।
गुड़ के मोदक भोग लगत हैं मूषक वाहन चढ़े सरें।
सौम्य रुप सेवा गणपति की विघ्न रोग जो दूर करें।।
भादों मास शुक्ल चतुर्थी दोपारा भरपूर परें।
लिया जन्म गणपति प्रभुजी ने दुर्गा मन आनन्द भरे।।
श्री शंकर को आनन्द उपजे नाम सुने सब विघ्न टरें।
आन विधाता बैठे आसन इन्द्र अप्सरा नृत्य करें।।
वेद ब्रह्म विष्णु जाको विघ्न विनाशक नाम धरें।
एक दन्त गजवदन विनायक त्रिनयन रुप अनूप धरें।।
खम्बा सा उदर पुष्ट है देख चन्द्रमा हास्य करे।
दे शाप श्री चन्द्रदेव को कलाहीन तत्काल करें।।
चौदह लोक में फिरें गणपति तीन भुवन में राज्य करें।
उठ प्रभात जब आरती गावें जाके शिर यश छत्र फिरें।।
गणपति की पूजा पहले करनी काम सभी निर्विघ्न सरें।
तुच्छ दास श्री गणपति जी की हाथ जोड़कर स्तुति करें।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। ईश्वर प्रार्थना ।।

तेरे पूजन को भगवान बना मन्दिर आलीशान।
किसने जानी तेरी माया किसने भेद तिहारा पाया।
हारे ऋषि मुनि कर ध्यान बना मन्दिर आलीशान।
तू ही जल में तू ही थल में तू ही मन में तू ही वन में।
तेरा रुप अनूप महान बना मन्दिर आलीशान।
तू हर गुल में तू बुलबुल में तू हर डाल मे पातन में।
तू हर दिल में मूर्तिमान बना मन्दिर आलीशान।
तूने राजा रंक बनाये तूने भिक्षुक राज बैठाये।
तेरी लीला ऐसी महान बना मन्दिर आलीशान।
भजु श्री गोविन्द परमानन्द करुणाकन्द राम हरे।
श्रीदशरथनंदन असुरनिकंदन जनउरचंदन श्याम हरे।
कृष्ण मुरारे नन्द दुलारे प्रीतम प्यारे जयकृष्ण हरे।
जयराम हरे जयराम हरे जयकृष्ण हरे जयकृष्ण हरे।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती शिव जी की ।।

जय शिव ओंकारा, ऊं जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा।। ऊ जय ..
एकानन, चतुरानन, पंचानन राजे।
हंसासन, गरुड़ासन, वृषवाहन साजे।। ऊ जय ..
दो भुज चार चर्तुभुज दसभुज अति सोहे।
त्रिगुण रुप निरखते त्रिभुवन जन मोहे।। ऊ जय.
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी कर माला धारी।। ऊ जय ..
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे।। ऊ जय ..
कर के मध्ये कमंडलु चक्र त्रिशूलधारी।
सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी।। ऊ जय ..
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका।। ऊ जय ..
त्रिगुणस्वामी जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावे।। ऊ जय

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती शिव शंकर जी की ।।

शीश गंग अर्द्धांग पारवती सदा विराजत कैलाशी,
नन्दी भृंगी नृत्य करत हैं गुन भक्त शिव का दासी।
शीतल मन्द सुगन्ध पवन बहे बैठे हैं शिव अविनाशी,
करत गान गन्धर्व सप्तसुर राग रागनी अतिगासी।
यक्ष भैरवी जहां डोलत बोलत हैं अनेक वासी,
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर भंवर करत हैं गुंजासी।
कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु लग रहे लक्षयासी,
सूर्य कांति सम पर्वत शोभित चन्द्र भावना वासी।
छहों ऋतु नित फलत रहत हैं पुष्प चढ़त हैं वर्षासी,
देव मुनिजन की भीड़ पड़त है निगमरहत जो नितवासी।
ब्रह्मा, विष्णु जाको ध्यान धरत हैं कुछ शिव हमको फरमासी,
ऋद्धि-सिद्धि के दाता शंकर सदा आनन्दित सुखरासी।
जिनके सुमिरण सेवा करते टूट जाये यम की फांसी,
त्रिशूल धरजी को ध्यान निरंतर मन लगाकर जो गासी।
दूर करो विपता शिव तिनकी जन्म शिव पद पासी।
कैलाश काशी के वासी अविनाशी मेरी सुध लीज्यो।
तुम जो प्रभुजी सदा सयाने अवगुण मेरे सब ढकियो,
सब अपराध क्षमाकर शंकर किंकर की विनती सुनियो।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। शिव स्तुति ।।

श्री गिरिजापति बंदिकर, चरण मध्य शिर नाय।
कहत अयोध्यादास तुम, मो पर करहु सहाय।।

नन्दी कर सवारी नाग अंगीकार धारी,
नित संत सुखकारी नीलकंठ त्रिपुरारी हैं।
गले मुण्डमाल धारी सिर सोहे जटाधारी,
वाम अंग में बिहारी गिरिराज सुतवारी हैं।
दानी देख भारी शेष शारदा पुकारी,
काशीपति मदनारी कर शूल चक्रधारी हैं।
कला उजियारी लख देव सो निहारी,
यश गावें वेद चारी सो हमारी रखवारी हैं।।1।।

शम्भु बैठे हैं विशाला पीवैं भंग को प्याला,
नित रहें मतवाला अहि अंग पे चढ़ाये हैं।
गले सोहे मुण्डमाला कर डमरु विशाला,
अरु ओढ़े मृगछाला भस्म अंग में लगाये हैं।

संग सुरभी सुतमाला कर भक्तन प्रतिपाला,
मृत्यु हरे अकाला शीश जय को बढ़ाये हैं।
कहैं रामलाला मोहिं करो तुम निहाला अब,
गिरिजापति कैलाश जैसे काम को जलाये हैं।।२।।

मारा है जालन्धर और त्रिपुर को संहारा जिन,
जारा है काम जाके शीश गंगधारा है।
धारा है अपार जासु महिमा तीनों लोक,
भाल में है इन्दु जाके सुषमा के सारा है।
सारा है बात सब, खोल खायो हलाहल जानि,
भक्त के अधारा जाहिं वेद न उचारा है।
चारा है भाग जाके द्वार है गिरिश कन्या,
कहत अयोध्यादास सोई मालिक हमारा है।।३।।

अष्ट गुरु ज्ञानी मुख वेदवानी,
सोई भवन में भवानी सुख सम्पति लहा करें।
मुण्डन की माला जाके चन्द्रमा ललाट सोहें,
दासन के दास जाके दारिद दहा करें।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

चारो द्वार बन्दी जाके द्वारपाल नन्दी,
कहत कवि अनन्दी नर नाहक हा हा करें।
जगत रिसाय यमराज की कहा बसाय,
शंकर सहाय तो भयंकर कहा करै।४।।

गौर शरीर में गौरि विराजत,
मोर जटा सिर सोहत जाके।
नागन को उपवीत लसै अयोध्या,
कहें शशि भाल में ताके।
दान करैं पल में फल चारि और श्री टारत अंक
लिखे विधना के शंकर नाम निशंक सदाहि
भरोसा रहैं निशिवासर ताके।।५।।

।। दोहा।।
मंगसर मास हेमन्त ऋतु, छठ दिन है शुभ बुद्ध।
कहत अयोध्यादास तुम, शिव के विनय समृद्ध।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री पार्वती जी की ।।

जय पार्वती माता मैया जय पार्वती माता।
ब्रह्मसनातन देवी शुभ फल की दाता।। टेक
अरिकुल पद्म विनाशिनी जय सेवक त्राता।
जगजीवन जगदम्बा हरिहर गुण गाता।। जय..
सिंह को वाहन साजे कुण्डल दे साथा।
देव वधू जहं गावत नृत्य करत ताथा।। जय..
सतयुग रुपशील अति सुन्दर नाम सति कहलाता।
हिमाचल घर जन्मी सखियन संगराता।। जय..
शुम्भ निशम्भ विदारे हिमाचल स्थाता।
सहस्त्रभुजा तनु धरके चक्र लिया हाथा।। जय..
सृष्टि रुप तुही हैं जननी शिव संग रंगराता।
नन्दी भृंगी बीन लही सारा मदमाता।। जय...
देवन अरज करत हम चित्त को लाता।
गावत दे दे ताली मन में रंग आता।। जय..
श्री पार्वती देवी की आरती जो कोई नर गाता।
सदा सुखी नित रहता सुख सम्पत्ति पाता।। जय..

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री अम्बा जी की।।

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी।।
मांग सिदूंर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्जवल से दोऊ नैना, चन्द्रवदन नीको।।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्तपुष्प गल माला कंठन पर साजै।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर-नर-मुनिजन सेवत, तिनके दुखहारी।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति।।
शुम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमाती।।
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु-कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे।।
ब्रह्मानी, रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरुं।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरु।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पति करता।।
भुजा चार अति शोभित, वरमुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी।।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति।।
श्री अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री जगदीश्वर जी की।।

ओ३म् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करें।। ओ३म् जय ....
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनसे मन का। स्वामी .....
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। ओ३म् जय ....
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी। स्वामी...
तुम बिन और न दूजा, आस करुं जिसकी।। ओ३म् जय ....
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी। स्वामी .....
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ओ३म् जय ....
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता। स्वामी....
मैं मूरख खलकामी, कृपा करो भर्ता।। ओ३म् जय ....
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति। स्वामी....
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति।। ओ३म् जय ....
दीनबन्धु दुःखहर्त्ता, तुम रक्षक मेरे। स्वामी ....
करुणा हस्त उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।। ओ३म् जय ....
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। स्वामी ....
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। ओ३म् जय ....
श्री जगदीश जी की आरती, जो कोई नर गावे। स्वामी ....
कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पति पावे।। ओ३म् जय ....

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री सत्यनारायण जी की।।

जय लक्ष्मीरमणा श्री जय लक्ष्मीरमणा।
सत्नारायण स्वामी जनपातक हरणा।। जय ....
रत्न जड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजे।
नारद करत निराजन घंटा ध्वनि बाजे।। जय ....
प्रगट भये कलि कारण द्विज को दर्श दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर कंचन महल कियो।। जय ...
दुर्बल भील कठारो इन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपति हरी।। जय ..
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीनी।। जय...
भाव भक्ति के कारण छिन-छिन रुप धरयो।
श्रद्धा धारण कीनी तिनको काज सरयो।। जय..
ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों दीनदयाल हरी।। जय...
चढ़त प्रसाद सवाया कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से राजी सत्यदेवा।। जय ...
श्री सत्यनारायण जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे।। जय...

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री सरस्वती जी की-१।।

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता।
सद्गुण वैभव शालिनी, त्रिभुवन विख्याता।।
चन्द्रवदनि पद्मासिनि, द्युति मंगलकारी।
सोहे शुभ हंस सवारी, अतुल तेजधारी।। मैया जय .....
बाएं कर में वीणा, दाएं कर माला।
शीश मुकुट मणि सोहे, गल मोतियन माला।। मैया जय .....
देवि शरण जो आए, उनका उद्धार किया।
पैठि मंथरा दासी, रावण संहार किया।। मैया जय .....
विद्या ज्ञान प्रदायिनी ज्ञान प्रकाश भरो।
मोह, अज्ञान और तिमिर का, जग से नाश करो। मैया जय ...
धूप दीप फल मेवा, मां स्वीकार करो।
ज्ञानचक्षु दे माता, जग निस्तार करो। मैया जय .....
मां सरस्वती की आरती, जो कोई जन गावे।
हितकारी सुखकारी, ज्ञान भक्ति पावे।। मैया जय .....

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री सरस्वती जी की-२।।

आरती करुं सरस्वती मातु, हमारी हो भव भय हारी हो।
हंस वाहन पद्मासन तेरा, शुभ वस्त्र अनुपम है तेरा,
रावण का मन कैसे फेरा, वर मांगत बन गया सवेरा
यह सब कृपा तिहारी हो, उपकारी हो मातु हमारी हो।
तमोज्ञान नाशक तुम रवि हो, हम अम्बुजन विकास करती हो,
मंगल भवन मातु सरस्वती हो बहुमूकन वाचाल करती हो,
विद्या देने वाली वीणा धारी हो, मातु हमारी हो।
तुम्हारी कृपा गणनायक, लायक विष्णु भए जग के पालक,
अम्बा कहायी सृष्टि ही कारण, भये शम्भु संसार ही घालक,
बन्दों आदि भवानी जग, सुखकारी हो मातु हमारी हो।
सद्बुद्धि विद्या बल मोही दीजै, तुम अज्ञान हटा रख लीजै,
जन्मभूमि हित अर्पण कीजे, कर्मवीर भस्महिं कर दीजै,
ऐसी विनय हमारी, भवभय हारी हो, मातु हमारी हो।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री लक्ष्मी जी की।।

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसदिन सेवत, हरि विष्णु विधाता।। ओ३म् ....
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।। ओ३म् ....
दुर्गा रुप निरंजनि, सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता।। ओ३म् ....
तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभ दाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता।। ओ३म् ....
जिस घर में तुम रहती, तहं सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता।। ओ३म् ....
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता।। ओ३म् ....
शुभ-गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता।। ओ३म् ....
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।। ओ३म् ....

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री कुन्जबिहारी जी की।।

आरती कुन्जबिहारी की। श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की।।
गले में बैजयन्ती माला। बजावै मुरली मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला। नंद के आनन्द नन्दलाला।
गगन सम अंग कांति काली। राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े बनमाली। भ्रमर सी अलक।
कस्तूरी तिलक चंद्र सी झलक। ललित छबि श्यामा प्यारी की।
श्री गिरिधर.....
कनकमय मोर मुकुट बिलसै। देवता दरसन को तरसैं।
गगन सों सुमन रासि बरसै। बजे मुरंचग।
मधुर मिरदंग ग्वालिन संग। अतुल रति गोप कुमारी की।
श्री गिरिधर.....
जहां ते प्रकट भई गंगा। कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा।
स्मरन ते होत मोह भंगा। बसी सिव सीस जटाके के बीच।
हरै अघ कील। चरन छवि श्रीबनवारी की।।
श्री गिरिधर.....
चमकती उज्जवल तट रेनू। बज रही वृन्दावन बेनू।

चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू। हंसत मृदु मंद चांदनी चंद।
कटत भव फन्द, टेर सुन दीन भिखारी की।।
श्री गिरिधर.....
आरती कुंज बिहारी की। श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की।।

।। आरती श्री कृष्ण जी की-१।।

ऊ जय श्री कृष्ण हरे, प्रभु जय श्री कृष्ण हरे
भक्तजन के दुःख टारे पल में दूर करे। जय श्री कृष्ण हरे।।
परमानन्द मुरारी मोहन गिरधारी,
जय रस रास बिहारी जय जय गिरधारी।। ऊ जय।।
कर कंचन कटि कंचन श्रुति कुण्डल बाला,
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे बनमाला ।। ऊ जय।।
दीन सुदामा तारे, दरिद्र दुःख टारे,
गज के फन्द छुड़ाये भव सागर तारे ।। ऊ जय।।
हिरण्यकश्यप संहारे नर हरि रुप धरे,
पाहन से प्रभु प्रकटे जन के बीच पड़े ।। ऊ जय।।
केशी कंस विदारे नलकुबेर तारे,
दामोदर छवि सुन्दर भगतन रखवारे ।। ऊ जय।।
काली नाग नथैया नटवर छवि सोहे,
फन फन नाचा करते नागन मन मोहे ।। ऊ जय।।
राज्य उग्रसेन थापे, माता शोक हरे,
द्रुपद सुता पत राखी करुणा लाज भरे ।। ऊ जय।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री कृष्ण जी की-२।।

आरती युगल किशोर की कीजै। राधे तन मन धन न्यौछावर कीजै।।
रवि शशि कोटि बदन की शोभा। ताहि निरख मेरो मन लोभा।।
गौर श्याम मुख निरखत रीझौ। प्रभु को नए रुप नयन भर पीजै।।
कंचन थार कपूर की बाती। हरि आए निर्मल भई छाती।।
फूलन की सेज फूलन की माला। रत्न सिंहासन बैठे नन्दलाला।।
मोर मुकुट कर मुरली सोहे। नटवर वेष देख मन मोहे।।
ओढ़े पीत नील पट सारी। कुंज बिहारी गिरिवर धारी।।
श्री पुरुषोत्तम गिरिवर धारी। आरती करत सकल बृज नारी।।
नंदनंदन वृषभानु किशोरी। परमानन्द स्वामी अविचल जोरी।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। श्री बालकृष्ण आरती ।।

आरती बालकृष्ण की कीजै। अपनो जन्म सफल कर लीजै।।
श्रीयशोदा को परम दुलारो। बाबा की अंखियन को तारो।।
गोपिन के प्राणन को प्यारो। इनपै प्राण न्यौछावर कीजै।।
आरती।।

बलदाऊ को छोटो भैया। कनुवां कहि-कहि बोलत मैया।।
परम मुदित मन लेत बलैया। यह छवि नैनन में भर लीजै।।
आरती।।

श्री राधावर सुघर कन्हैया। ब्रज जन को नवनीत खवैया।।
देखत ही मन नैन चुरैया। अपनौ सर्वस इनको दीजै।।
आरती।।

तोतरि बोलन मधुर सुहावे। सखन संग खेलत सुख पावै।।
सोई सुकृति जो इनको ध्यावै। अब इनको अपनों कर लीजै।।
आरती।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। श्री गिरधर की आरती ।।

हे गिरधर तेरी आरती गाऊं।।
आरती गाऊं प्यारे तुमको रिझाऊं।।
मोर मुकुट तेरे सिर पर सोहे,
प्यारे बंशी मेरो मन मोहे,
सुनि-सुनि तन मन सुधि बिसराऊं।। हे गिरधर।।

संग सोहे वृषभानु दुलारी,
रसिक जनन की प्राणन प्यारी,
युगल छबि के मैं दर्शन पाऊं।। हे गिरधर।।

मुझ अनाथ के नाथ आप हो,
जीवन धन मेरे प्राण आप हो,
चरण कमल पै बलि-बलि जाऊं
इन चरणन पे बलि-बलि जाऊं।। हे गिरधर।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री राधा जी की।।

जय जय श्री राधे जू मैं शरण तिहारी।
लोचन आरती जाऊं बलिहारी।।
जय जय ...
पाठ पटम्बर ओढ़े नील सारी।
सीस के सैदुर जाऊं बलिहारी
जय जय ...
रतन सिंहासन बैठी श्री राधे।
आरती करें हम प्रिय संग तोरी।
जय जय ...
झलमल-झलमल मानिक मोती।
अललक मन मोहे प्रिय संग जोरी।।
जय जय ...
श्रीराधे पद पंकज भगति की आशा।
दास भक्त करत भरोसा।।
जय जय ...
राधा कृष्ण की जाऊं बलिहारी।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री राम चन्द्र की-१ ।।

जगमग जगमग जोत जली है।
राम आरती होने लगी है।।
भक्ति का दीपक प्रेम की बाती।
आरती संत करें दिन-राती।।
आनन्द की सरिता उभरी है।
जगमग जगमग जोत जली है।।
कनक सिंघासन सिया समेता।
बैठहिं राम होई चित चेता।।
बाम भाग में जनक लली है।
जगमग जगमग जोत जली है।।
आरती हनुमन्त के मन भावे।
राम कथा नित शंकर गावे।।
संतो की ये भीड़ लगी है।
जगमग जगमग जोत जली है।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री राम चन्द्रजी-२।।

आरती कीजे श्री रामचन्द्र जी की।
हरि हरि दुष्ट दलन सीतापति की।। टेक।।
पहली आरती पुष्पन की माला।
काली नाग नाथ लाये गोपाला।
दूसरी आरती देवकी नंदन।
भक्त उबारन कंस निकंदन।।
तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे।
रत्न सिंहासन सीता राम जी सोहै।।
चौथी आरती चहुं युग पूजा।
वेद निरंजन स्वामी और न दूजा।।
पांचवी आरती श्री राम को ध्यावे।
रामजी का यश नाम देव जी गावें।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती रघुवर लाला की ।।

आरती रघुवर लाला की। सांवरिया नैन विशाला की।।
कमल कर धनुष बाण धारे। सलौने नैना रतनारे।।
छवि लख कोटि काम हारे।
अलक की बलन पलक की चलन,
पीठ पट हलन, लटक सुन्दर वन माला की ...
संग सिया सोभा की खानी। बिराजे जगत जननि रानी।
प्रेम भक्ति रस की दानी। भरत से वीर लखन रणधीर।
प्रजा की भीर शत्रुघन रुप रसाला की।
सदा तुम दीनन हिताकारी। अधम केवट शबरी तारी।
गिद्ध की कर्म गति न्यारी।
सुरन को ईश, कौशलाधीश,
रक्ष जगदीश, शम्भु हृदय सुख पाला की...
चरण चापत अंजनी को लाल। प्रेम रस बांटत दीनदयाल।
बरस रही पुष्पों की जयमाल।
भक्त भय हरण सदा सुख करण।
हरी ले शरण, जानकी नाथ कृपाला की ...

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री रामायण जी की।।

आरती श्री रामायणजी की।
कीरति कलिल ललित सिय-पी की।।
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिज्ञान बिशारद।।
शुक सनकादि शेष अरु शारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी।।
आरती .....

गावत वेद पुरान अष्टदस। छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस।।
मुनि जन धन सन्तन को सरबस। सार अंस सम्मत सबही की।।
आरती .....

गावत संतत शम्भु भवानी। अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।।
व्यास आदि कविबर्ज बखानी। कागभुसुंडि गरुड़ के ही की।।
कलिमल हानि विषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबति की।।
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब बिधि तुलसी की।।
आरती .....

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री वैष्णों देवी जी की ।।

सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी, कोई तेरा पार न पाया।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले तेरी भेंट चढ़ाया।
सुआ चोली तेरे अंग विराजे, केसर तिलक लगाया।
ब्रह्मा वेद पढ़ें तेरे द्वारे, शंकर ध्यान लगाया।। सुन।।
नंगे नंगे पग से तेरे, सम्मुख अकबर आया।
सोने का छत्र चढ़ाया।। सुन ।।
ऊंचे पर्वत बने शिवाले, नीचे महल बनाया।। सुन ।।
सतयुग द्वापत त्रेता मध्ये, कलयुग राज बसाया।। सुन।।
धूप दीप नैवेद्य आरती, मोहन भोग लगाया ।। सुन।।
ध्यानु भक्त मैया तेरा गुण गावे, मन वांछित फल पाया।। सुन।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री हनुमान जी की ।।

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर कांपै। रोग दोष जाके निकट न झांके।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाए।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजी के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संजीवन प्रान उबारे।।
पैठि पाताल तोरि जम-कारे। अहिरावण की भुजा उखारे।।
बाएं भुजा असुरदल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारें। जय जय जय हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई।।
जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परम पद पावै।।
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती संकट मोचन की।।

ऊ जय हनुमत वीरा स्वामी जय हनुमत वीरा,
संकट मोचन स्वामी तुम हो रणधीरा।
पवन-पुत्र अंजनी-सुत महिमा अति भारी,
दुःख दरिद्र मिटाओ संकट सब हारी।
बाल समय में तुमने रवि को भक्ष लियो,
देवन स्तुति कीन्हीं तब ही छोड़ दियो।
कपि सुग्रीव राम संग मैत्री करवाई,
बाली बली मराय कपीसहिं गद्दी दिलवाई।
जारि लंक को ले सिय की सुधि वानर हर्षाए,
कारज कठिन सुधारे रघुवर मन भाये।
शक्ति लगी लक्ष्मण के भारी सोच भयो,
लाय संजीवन बूटी दुःख सब दूर कियो।
ले पाताल अहिरावण जबहिं पैठि गयो,
ताहि मारि प्रभु लाये जय जयकार भयो।
घाटे मेंहदीपुर में शोभित दर्शन अति भारी,
मंगल और शनिश्चर मेला है जारी।
श्री बालाजी की आरती जो कोई नर गावे,
कहत इन्द्र हर्षित मन वांछित फल पावे।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री गायत्री जी की ।।

आरती श्री गायत्री जी की। ज्ञान दीप और श्रद्धा की बाती,
सो भक्ति ही पूर्ति करै जहं घी की
। आरती०।।
मानस की शुचि थाल के ऊपर, देवि की ज्योति जगै, जहं नीकी
।। आरती०।।
शुद्ध मनोरथ के जहां घण्टा, बाजैं करैं पूरी आसहु ही की
।। आरती०।।
जाके समक्ष हमें तिहूं लोक कै,
गद्दी मिलै तबहूं लगै फीकी
।। आरती०।।
संकट आवैं न पास कबौ तिन्हें,
सम्पदा औ सुख की बनै लीकी
।। आरती०।।
आरती प्रेम सो नेम सों करि,
ध्यावहिं मूरति ब्रह्म लली की
।। आरती०।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री गंगा जी की -१।।

ओ३म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता।।
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता।। ओ३म् जय ....
पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता।। ओ३म् जय ....
एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता।। ओ३म् जय ....
आरती मात तुम्हारी, जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता।। ओ३म् जय .....

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री गंगा जी की -२।।

ओ३म् जय जय गंगे श्री गंगे।। जय०।।
त्रिलोकी के तारन कष्ट निवारण।
भक्त उधारण आई गंगे।। जय०।।
आश्चर्य महिमा वेद सुनावे।
नर मुनि ज्ञानी ध्यान लगावे।। जय०।।
जो तेरी शरणागत आवै
जीवन मुक्ति इच्छा फल पावै।। जय०।।
पाप हरण भक्ति की दाता।
काटे दर्शन यम की त्राता।। यज०।।
मैया की आरती जो नित गावे।
बसि बैकुण्ठ अमर पद पावे।। जय०।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री संतोषी माता जी की ।।

जय संतोषी माता, मैया जय संतोषी माता।
अपने सेवक जन को सुख सम्पति दाता।। जय०
सुन्दर चीर सुनहरी, मां धारण कीन्हों।
हीरा पन्ना दमके, तन श्रृंगार लीन्हों।। जय०
गेरु लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे।
मन्द हंसत करुणामयी, त्रिभुवन मन मोहे।। जय०
स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर ढुरें प्यारे।
धूप, दीप, मधुमेवा, भोग धरें न्यारे।। जय०
गुड़ अरु चना परमप्रिय तामे संतोष कियो।
संतोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो।। जय०
शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही।
भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही।। जय०
मंदिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई।
विनय करें हम बालक, चरनन सिर नाई।। जय०
भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै।
जो मन बसै हमारे, इच्छा फल दीजै।। जय०

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

दुखी, दरिद्री, रोगी, संकट मुक्त किये।
बहु धन-धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिये।। जय०
ध्यान धर्‌यो जिस जन ने, मनवांछित फल पायो।
पूजा कथा श्रवण कर घर आनन्द आयो।। जय०
शरण गहे की लज्जा, राखियो जगदम्बे।
संकट तू ही निवारे, दयामयी अम्बे।। जय०
संतोषी मां की आरती, जो कोई नर गावे।
ऋद्धि-सिद्धि, सुख-सम्पति जी भरकर पावे।। जय०

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री परशुराम जी की-१।।

ॐ जय परशुराम हरे, प्रभु जय परशुराम हरे
दुखी जनो की विपदा, पल में दूर करें-ॐ जय--
आगे वेद हैं चारों, पीछे धनुष धरे
जटा शीश पे राजत, परशु हाथ धरे-ॐ जय
ब्रहत्सूत्र कांधे पर, कटि पे मृग छाला
गले में माला शोभत, त्रिपुण्ड है भाला-ॐ जय
भृगुकुल के नन्दन, अरु जमदग्नि ताता
मात रेणुका जाये, ऋषि जन के त्राता- ॐ जय
कार्तवीर्य अन्यायी, सहस्त्र भुजाधारी
उसको मार गिरायो, भुजा काट डाली- ॐ जय
अजर अमर हो प्रभु, तुम बाल ब्रह्मचारी
भक्तन के रक्षक, अरु मंगल कारी- ॐ जय
मात पिता के सेवक, जग में विख्याता
चिरंजीवी हो प्रभु तुम, मन वांछित दाता- ॐ जय
परशुराम जी की आरती, जो कोई जन गावे
कहत ''ब्रह्मानन्द'' सेवक सुख सम्पति पावे- ॐ जय

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री परशुराम जी की-२ ।।

जय भृगु नन्दन दृष्टनिकन्दन, जन जन हितकारी।
वीर तपस्वी के ओजस्वी, जीवन सुखकारी।।
पिता तुम्हारे ऋषि जमदग्नि, सती रेणुका माता।
दिया ऋचीक ऋषि ने वर, तुम बने वीर विख्याता।।
चारों युगन प्रताप तुम्हारा, तेज पुंज बलधारी।।
जय भृगु नन्दन ...
शीश जटा मुख तेज छटा, अरु कण्ठ माल साजे।
कटि मृगछाला, वक्ष विशाला, तिलक भाले राजे।।
एक हाथ में परशु तुम्हारे, कान्धे पर धनु भारी।।
जय भृगु नन्दन ...
कार्तवीर्य अर्जुन राजा ने, काम धेनु की चतुराई।
हने तपस्यामग्न महामुनि, दीन प्रजा लुटवाई।।
ऐसे धर्म विरोधी मारे, पृथ्वी थी उद्धारी।।
जय भृगु नन्दन ...
दिव्य धनुष दे रामचन्द्र को, बल त्रेता में बढ़ाया।
कृष्ण संग द्वापर में कौरव, पाण्डव को समझाया।।

कलयुग में हिमगिरी के ऊपर, करते हो जप भारी।।
जय भृगु नन्दन ...
ऋषियों ने वरदान दिया, जो दरस तुम्हारे पावे।
ऋद्धि सिद्धि पावे कुलवृद्धि, उन पर विपद न आवे।।
मिटे दीनता बढ़े मनोबल, पुण्य लाभ हो भारी।।
जय भृगु नन्दन ...
परशुराम बलधाम तुम्हारी, आरती जो कोई गावे।
सफल मनोरथ होवे उसका, मन वांछित फल पावे।।
तुम रक्षक हो सदा हमारे हम हैं शरण तुम्हारी।।
जय भृगु नन्दन ...

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री भैरव जी की-१ ।।

जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा।
जय काली और गौरा देवी कृत सेवा।। जय.
तुम्ही पाप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक।
भक्तों के सुख कारक भीष्ण वपु धारक।। जय.
वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी।
महिमा अमित तुम्हारी जय जय भयहारी।। जय.
तुम बिन देवा सेवा सफल नहीं होवे।
चौमुख दीपक दर्शन दुःख सगरे खोवे।। जय.
तेल चटकि दधि मिश्रित भाषावलि तेरी।
कृपा करिये भैरव करिये नहीं देरी।। जय.
पांव घूंघरु बाजत अरु डमरु डमकावत।
बटुकनाथ बन बालक जन-मन हरषावत।। जय.
बटुकनाथ की आरती जो कोई नर गावे।
कहे धरणीधर नर मनवांछित फल पावे।। जय.

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री भैरवनाथ जी की-२ ।।

सुनो जी भैरव लाड़िले, कर जोड़ कर विनती करुं।
कृपा तुम्हारी चाहिए, मैं ध्यान तुम्हारा ही धरुं।
मैं चरण छूता आपके, अर्जी मेरी सुन लीजिये।
मैं हूं मति का मन्द, मेरी कुछ मदद तो कीजिये।
महिमा तुम्हारी बहुत, कुछ थोड़ी सी मैं वर्णन करुं।
सुनो जी भैरव..

करते सवारी स्वान की, चारों दिशा में राज्य है।
जितने भूत और प्रेत, सबके आप ही सरताज हैं।
हथियार हैं जो आपके, उसका क्या वर्णन करुं।
सुनो जी भैरव ....

माता जी के सामने तुम, नृत्य भी करते सदा।
गा गा के गुण अनुवाद से, उनको रिझाते ही सदा।
एक सांकली है आपकी, तारीफ उसकी क्या करुं।
सुनो जी भैरव ...

बहुत सी महिमा तुम्हारी, मेंहदीपुर सरनाम है।
आते जगत के यात्री, बजरंग का स्थान है।

श्री प्रेतराज सरकार के, मैं शीश चरणों में धरुं।
सुनो जी भैरव ....
निशदिन तुम्हारे खेल से, माता जी खुश रहें।
सिर पर तुम्हारे हाथ रखकर, आर्शीवाद देती रहें।
कर जोड़ कर विनती करुं, अरु शीश चरणों में धरुं।
सुनो जी भैरव ....

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री शारदा देवी ।।

जय दुर्गे, जय दुर्गे, जय मैहर वाली शारदा
पूर्व दिशा का दरवाजा, देवी शारदा माई का
दक्षिण में है भैरव बाबा, पश्चिम काली माई का
पहरे पर पवन कुमार, जय मैहर वाली शारदा
ऊंचे सिंहासन मैया विराजी है
करती है मैया हरपल भक्तों की रखवाली
सेवक खड़े हैं तेरे द्वार, जय मैहर वाली शारदा
कलकत्ता में तुम्ही विराजी, बनके काली माता
मैहर में तुम आन विराजी, बनकें शारदा माता
मैया तेरो महिमा है अपरम्पार, जय मैहर वाली शारदा
आल्हा को मैया तुमने अमर बनाया,
ध्यानू भक्त को मैया दरश दिखाया
हम सेवक खड़े तेरे द्वार, जय मैहर वाली शारदा
घट घट की मैया जानन हारी,
करती हो मैया सेवक रखवारी,
भक्तों से सुन लो पुकार, जय मैहर वाली शारदा

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। श्री शनिदेव आरती ।।

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी।
सूरज के पुत्र प्रभु छाया महतारी ।। जय।।
श्याम अंक वक्र दृष्ट चतुर्भुजा धारी।
नीलाम्बर धार नाथ गज की असवारी ।। जय।।
क्रीट मुकुट शीश रजित दिपत है लिलारी।
मुक्तन की माला गले शोभित बलिहारी ।। जय।।
मोदक मिष्ठान पान चढ़त हैं सुपारी।
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी ।। जय।।
देव दनुज ऋषि मुनि सुमरिन नर नारी।
विश्वनाथ धरत ध्यान शरण हैं तुम्हारी ।। जय।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती यमुना जी की ।।

जय भानुसुता सुखदानी वरदानी।
जय जय यमुना महारानी।। टेक
जय रविजा जय जय अघ छैनी।
जय कलिन्दजा स्वर्ग नसैनी।।
यम के त्रास मिटानी जग जानी।।१
जय जम भगिनी जय वरदानी।
जय सुर बंदित जय हो भवानी।।
अद्‌भुत महिमा मानि बखानी।।२
जय निज जन के संकट हरनी।
महिमा अद्‌भुत वेदन वरनी।।
मोहन की पटरानी पहिचानी।।३।।
जय भव सागर तारिनी माता।
कृपा करो जन आनन्द दाता।।
अगम मुकुन्द बखानी सनमानी।।४

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती श्री गुरु नानक देव जी की।।

गगन में थालु रवि चंदु दीपक बने,
तारिका मंडल जनक मोती।
धूममल आनलो पवनु चंवरो करे,
सगल बनराई फूलन्त जोती।
कैसी आरती होई भव खण्डना तेरी आरती।
अनहता सबद बाजत भेरी। रहाउ।
सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ,
सहस मूरति नना एक तोही।
सहस पद विमल नन एक पद गंध बिनु
सहस तव गन्ध इव चलत मोहि।
सब महि जोति जोति है सोई,
तिसके चानणि सभ महि चानणु होई।
गुरसाखी जोति परगटु होई, जो नित भावे सु आरती होई।
हरि चरण कमल मकरन्द लोभित मनो,
अनदीनो मोहि आही पिआसा।
कृपा जल देहि नानक सारिंग कउ, होई जाते तेरे नामि वासा।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती तुलसी जी की ।।

जय जय तुलसी माता सब जग की सुख दाता वर दाता।।
जय।।
सब योगों से ऊपर सब रोगों के ऊपर,
रज से रक्षा करे भवसागर त्राता।
बहु पुत्री हे श्यामा, सुर बल्ली ग्राम्या,
विष्णु प्रिये जो तुमको सेवे सो नर तर जाता।
हरि के शीश विराजत, त्रिभुवन से हो वंदित,
पतितजनों की तारिणी, तुम हो विख्याता।
लेकर जन्म विजन में आई दिव्य भवन में,
मानव लोक तुम्ही से सुख सम्पत्ति पाता।
हरि को तुम अति प्यारी, श्यामवर्ण सुकुमारी,
प्रेम अजब है उनका तुमसे है नाता।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

।। आरती रविदास की ।।

नामु तेरो आरती भजनु मुरारे,
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पसारे।
नाम तेरा आसनो नाम तेरा उरसा
नामु तेरा केसरो ले छिटकारे।
नाम तेरा अंभुला नाम तेरा चंदनोघसि,
जपे नाम ले तुझहि कउ चारे।
नाम तेरा दीवा नाम तेरो बाती,
नाम तेरो तेल ले माहि पसारे।
नाम तेरे की ज्योति जगाई,
भइलो उजिआरो भवन सगलारे।
नाम तेरो तागा नाम फूल माला,
भार अठारह सगल जूठारे।
तेरो कियो तुझ ही किया अरपउ,
नाम तेरो तुही चंवर ढोलारे।
दस अठा अठसठे चारे खानी,
इहै वरतणि है सगल संसारे।
कहै रविदास नाम तेरो आरती,
सतिनाम है हरिभोग तुम्हारे।

श्री गोपालजी की आरती

जै गोपाल हरे, प्रभु जै गोपाल हरे।
दुर्बल दुःखी जनों के संकट सदा हरे।।

क्रीट मुकुट कटि किंकिन पग नूपुर साजे।
चारु चिबुक बिंवावर कर मुरली राजे।।

वक्षस्थल बन माला कौस्तुभ मणि धारी।
वृन्दा विपिन बिहारी निज जन सुखकारी।।

अलकावलि अति सुन्दर भाल तिलक सोहै।
कुण्डल द्वै मकराकृत सुर मुनि मन मौहे।।

यदुनन्दन जग वन्दन कोमल श्यामांगे।
वारिजवदन सुशोभित निर्जित मदनांगे।।

श्रेष्ठ सुहृद सर्वेश्वर सर्व सृष्टि स्वामी।
सत पथ परम प्रदर्शक ईश गरुण गामी।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com

सुखसागर गुण आगर नटनागर भगवन्।
रसिकजन हृदयेश्वर बृजपति विश्वात्मन्।।

पूर्ण पुरुष पुरुषोत्तम आनन्द घन राशि।
नारायण नित नूतन अव्यय अविनाशी।।

कृष्ण नाम गुण कीर्तन जो जन नित्य करै।
अति अपार भवसागर सहजहि पार तरै।।

For Free Religious Literature Visit our Homepage : www.geocities.com/dharamvichar
For co-operation in our works contact : MAHESH BATISH
Ph.: +91-1765-506521, Email : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com